REVIEW OF RESEARCH

ग्रामीण विकास में मीडिया की भूमिका
(झारखंड में रांची जिले के रातू प्रखंड के विशेष संदर्भ में)

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 8 | MAY - 2019

डॉ. सुनील दीपक घोडके

सहायक प्राध्यापक (अस्थाई)
झारखंड केन्द्रीय विश्वविद्यालय, ब्राम्बे, रांची.

सारांश :

भारत वर्ष मुख्यतः गांवों का देश है। यहाँ कीअधिकांश जनसँख्या गांवों में रहती है। गाँधी जी ने कहा था – "अगर आप असली भारत को देखना चाहते हैं तो गांवों में जाइए क्योंकि असली भारत गांवों में बसता है।" सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) ने पूरे भारतीय लोक जीवन को भी प्रभावित किया है। ग्रामीण भारत की प्रगति के लिए सूचना और संचार प्रौद्योगिकी अनिवार्य हो गई है। मीडिया लोकतंत्र की "चौथी संपत्ति" है और यह समाज के आंतरिक वर्गों तक अपनी पहुँच से सरकारी नीतियों के न्याय और लाभ सुनिश्चित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसलिए राज्य के राजधानी से सटे इस प्रखंड में ग्रामीण विकास में मीडिया की भूमका क्या है? इसे समझने का प्रयास प्रस्तुत शोध-प्रपत्र द्वारा किया जा रहा है।

कुंजी शब्द : संचार, माध्यम, मीडिया, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी(ICT)

प्रस्तावना:

भारतवर्ष मुख्यतः गांवों का देश है।यहाँ की अधिकांश जनसँख्या गांवों में रहती है। आधे से अधिक लोगों का जीवन खेती पर निर्भर है, इसलिए इस बात की आप कल्पना भी नहीं कर सकतें कि गाँव के विकास के बिना देश का विकास किया जा सकता है। भारत का ग्रामीण जीवन, सादगी और शोभा का भण्डार है। 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत की 68.84% आबादी ग्रामीण है जबकि 31.16% शहरी है। इन आंकड़ों से स्पष्ट है कि भारत अभी भी गांवों मेंबसता है। देश की 70 प्रतिशत जनसंख्या का विकास करने के लिए ग्रामीण क्षेत्र को विकसित करना अनिवार्य ही नहीं वरन एकमात्र श्रेष्ठतम विकल्प है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने राजनीतिक आंदोलन के साथ ही ग्रामीण विकास का नारा दिया था; क्योंकि, गाँधी जी ने कहा था – "अगर आप असली भारत को देखना चाहते हैं तो गांवों में जाइए क्योंकि असली भारत गांवों में बसता है" ग्राम उनके विकास कार्यक्रम का आधार है। भारत के प्रत्येक व्यक्ति को खाना, कपड़ा, रोजगार उपलब्ध कराना गाँधी का एकमात्र लक्ष्य था। गांधीजी के विचारानुसार आदर्श ग्राम पूर्णतया स्वावलम्बी होना चाहिए, घरों में प्रयाप्त प्रकाश एवं हवा की व्यवस्था होनी चाहिए, वे सभी स्थानीय साधन सामग्री से सम्पन्न होने चाहिए। उनमें पानी की उचित व्यवस्था के साथ-साथ आपसी भेद-भाव मिटाने के लिए सार्वजानिक मिलन-स्थल भी होनी चाहिए। सार्वजनिक चरागाह, दुग्धशाला, शिक्षा संस्थाएँ, जिनमें ओद्योगिक शिक्षा उपलब्ध हो तथा अपनी पंचायत प्रत्येक ग्राम में होनी चाहिए, रक्षा के लिए ग्रामरक्षक भी होना चाहिए- ऐसी थी गांधीजी की कल्पना। लेकिन आजादी के इकहत्तर साल से ज्यादा बीत जाने के बाद भी, अशिक्षा, गरीबी और पिछड़ेपन सभी दृष्टि से आज भी ग्रामीण भारत की दुर्दशाको दर्शाता है। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) ने पूरे भारत में जीवन बदल दिया है। ग्रामीण भारत की प्रगति के लिए सूचना और संचार प्रौद्योगिकी अनिवार्य हो गई है। वे ग्रामीण भारत में विकास के प्रयासों को उत्प्रेरित करने के लिए सूचना-प्रवाह का एक अभिन्न हिस्सा बन गए हैं। आज मीडिया लोकतंत्र की "चौथी संपत्ति" है और यह समाज के आंतरिक वर्गों तक अपनी पहुँच से सरकारी नीतियों के न्याय और लाभ सुनिश्चित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। वे सरकार और देश के नागरिकों के बीच एक श्रृंखला के रूप में कार्य करते हैं, लोगों को मीडिया पर विश्वास

होता है क्योंकि इसका दर्शकों पर भी प्रभाव पड़ता है। भारत में 1991 के बाद समाचार पत्र उद्योग जगत या पूरे मीडिया क्षेत्र में अमूल-चूल परिवर्तन दृष्टिगोचर होते हैं। मीडिया में आए बहुआयामी बदलाव ने हमें समाचारों के बारे में, उसकी विकसित तकनीक के बारे में और मीडिया की वास्तविक भूमिका और शक्ति के बारे में नए सिरे से सोचने पर बाध्य किया है। इन माध्यमों कि भूमिका को समझने के लिए ही झारखण्ड राज्य का चयन किया है, जिसकी राजधानी राँची है। प्रदेश का ज्यादातर हिस्सा छोटानागपुर पठार का हिस्सा है जो कोयल, दामोदर, ब्रम्हाणी, खड़कई, एवं स्वर्णरेखा नदियों का उद्गम स्थल भी है जिनके जलक्षेत्र ज्यादातर झारखण्ड में है। प्रदेश का ज्यादातर हिस्सा वन-क्षेत्र है, जहाँ हाथियों एवं बाघों की बहुतायत है। झारखंड वानस्पतिक एवं जैविक विविधताओं का भंडार कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी। झारखण्ड की आबादी लगभग 32.98 मिलियन है।जो भारत की कुल जनसंख्या का 2.72% हैं। यहाँ का लिंगानुपात 948 स्त्री प्रति 1000 पुरुष है। प्रतिवर्ग किलोमीटर जनसंख्या का घनत्व लगभग 414 है।

झारखंड क्षेत्र विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों एवं धर्मों का संगम क्षेत्र कहा जा सकता है। द्रविड़, आर्य, एवं आस्ट्रो-एशियाई भाषायें यहां बोली जाती है। हिंदी, नगपुरी, खोरठा, पंचपरगनिया, कुरमाली यहाँ की प्रमुख भाषायें हैं। इसके अलावा यहां कुड़ुख, संथाली, मुंडारी, हो बोली जाती है। झारखंड में बसनेवाले स्थानीय आर्य भाषीलोगों को सादान काहा जाता है। झारखंड में कई जातियां और जनजातियां हैं। यहाँ की आबादी में 26% अनुसूचित जनजाति, 12% अनुसूचित जाति शामिल हैं।राज्य की बहुसंख्यक आबादी हिन्दू धर्म(लगभग 67.8%) मानती है। दूसरे स्थान पर(14.5%) इस्लाम धर्म है। राज्य की लगभग 12.8% आबादी सारना एवं 4.1% आबादी ईसाइयत को मानती है।यहाँ की साक्षरता दर 64.4%है। जिसमें से पुरुष साक्षरता दर 76.8% तथा महिला साक्षरता दर 55.4% है। राँची से रातू की दूरी 16.4 किलोमीटर है। तेजी से हो रहा तकनीकी बदलाव और आर्थिक नीति में उतार-चढ़ाव के दौर की ग्रामीण पत्रकारिता में ग्रामीण जन जीवन की झलक तो मिलती है, पर समाचारों की होड़ में गांवों के माटी की महक गायब होती जा रही है।इसलिए राज्य के राजधानी से सटे रातू इस प्रखंड में ग्रामीण विकास में मीडिया की भूमका क्या है? इसे समझने का कार्य प्रस्तुत शोध-प्रपत्र द्वारा किया जा रहा है।

शोध का उद्देश्य

- मीडिया के विकास के कारण गाँव के विकास से संदर्भित सूचनाओं का संप्रेषण मीडिया में होता है या नहीं इसे जानना एवं समझना।

शोध प्रविधि : शोध आलेख के अध्ययन हेतु मैंने प्रथम एवं द्वितीय स्त्रोतों का उपयोग किया है प्रथम स्त्रोत में **"ग्रामीण विकास में मीडिया की भूमिका"** के अध्ययन के लिए मेरे द्वारा रातु प्रखंडके 50 उत्तरदाताओं का चयन दैव निदर्शन प्रणाली के आधार पर किया गया इसमें तीन प्रश्नों को लिया गया है। द्वितीय स्त्रोत के रूप में पुस्तकों, पत्रिकाएँ, शोध पत्र, भारत सरकार द्वारा प्रकाशित वार्षिक प्रतिवेदन और इंटरनेट वेबसाइट का प्रयोग किया गया है

तालिका क्रमांक 1.

आप जनसंचार के माध्यमों (जैसे- समाचार-पत्र, रेडियो, टेलीविजन और इंटरनेट) से सूचनाओं को समझने के लिए एक दिन में लगभग कितना समय खर्च करते हैं?

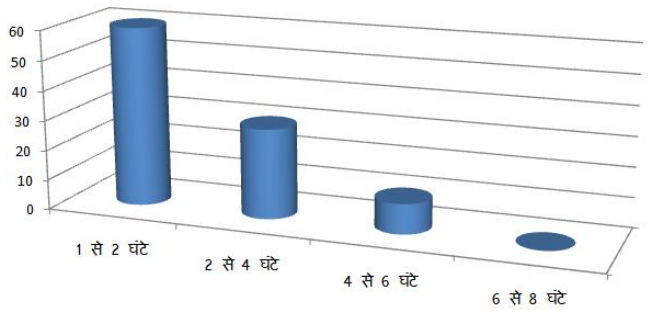

उपर्युक्त तालिका क्रमांक 1 के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि 60 प्रतिशत उत्तरदाता सूचना पाने के लिए दिन में से 1 से 2 घंटे का समय खर्च करते हैं। जिसे वह एक दिनमें थोड़े-थोड़े समय अंतराल पर देखते हैं वहीं 30 प्रतिशत उत्तरदाता सूचना पाने के लिए दिन में से 2 से 4 घंटे का समय खर्च करते हैं ये उत्तरदाता साक्षात्कार और विशेष कार्यक्रम देखना अधिक पसंद करते हैं और20 प्रतिशत उत्तरदाता सूचना पाने के लिए दिनमें से 4 से 6 घंटे का समय खर्च करते हैं जिसमें सूचनाओं के साथसाथ साक्षात्कार, पैनल विमर्श, रेडियो पर सखी चर्चा, विषय विशेषज्ञ चर्चा आदि विषयों को पसंद करते हैं तथा0 प्रतिशत उत्तरदाता सूचना पाने के लिए दिन में से6 से 8 घंटे का समय खर्च करते हैं।

निष्कर्षताः कहा जा सकता है कि उत्तरदाताओं को माध्यमों द्वारा सूचनाएं तो प्रेषित हो तो रही हैलेकिन उन्हें समझने के लिए उत्तरदाता 1 से 2 घंटे का समय खर्च करते हैं और उसमें भी उन्हें जिला,राज्य और देश की खबरें अधिक मिलती हैं और गाँव के विकास से संदर्भित खबरें कम मिलती हैं।

तालिका क्रमांक 2

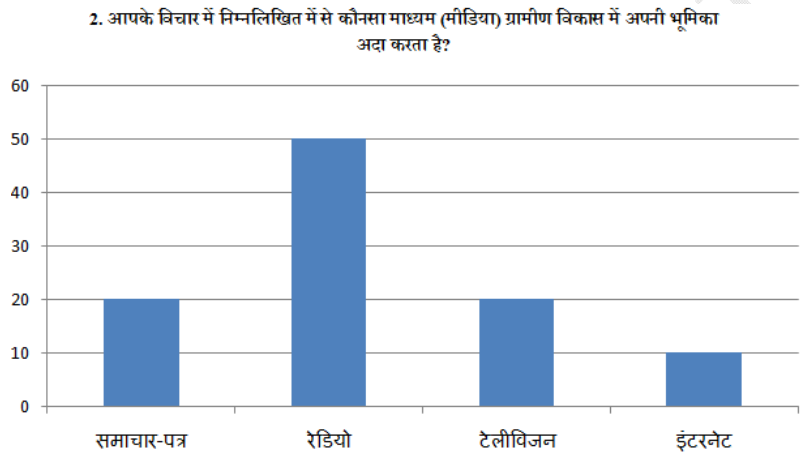

तालिका क्रमांक 2 के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि 50 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि ग्रामीण विकास में रेडियो अपनी महत्तम भूमिका अदा करता है, 20 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि ग्रामीण विकास के बारे में समाचारपत्र में ख़बरें प्रकाशित होती हैं तो वहीं 20 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि ग्रामीण विकास के बारे में टेलीविजन के द्वारा ख़बरें प्रसारित होती हैं तथा10 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि ग्रामीण विकास के बारे में इंटरनेट पर ख़बरें प्रकाशित होती हैं

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि ग्रामीण विकास से संदर्भित सूचनाएं आज भी रेडियो के माध्यम से दूर दराज के गांवों में बसे लोगों को मिलती है। वहीं समाचार-पत्र एवं टेलीविजन में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय समाचारों को अधिक स्थान दिए जाने के कारण ग्रामीण विकास से संदर्भीत ख़बरों को कम जगह मिल पाती हैं तथा इंटरनेट पर सूचनाएं तो बहुत है लेकिन गाँव के भौगोलिक दृष्टिकोण के अनुसार गाँव के विकास से संदर्भित सूचनाएं कम पाई जाती है ऐसा उत्तरदाताओं का मानना।है

तालिका क्रमांक 3.

प्रश्न क्रमांक 3. ग्रामीण लोगों को जब कोई विकास से संदर्भित तकलीफ या परेशानी होती है तो निम्नलिखित में से कौनसी मीडिया उस समस्या को सरकार और जनता के सामने लाती है?

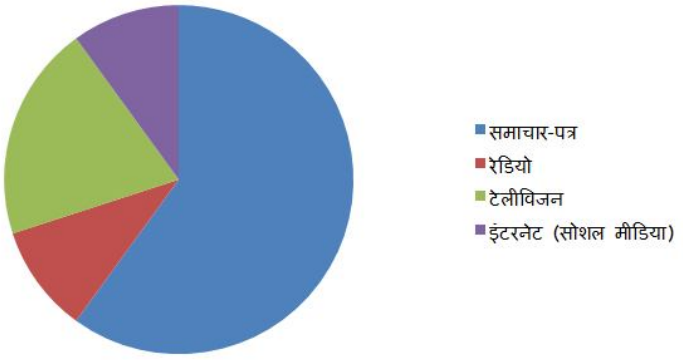

तालिका क्रमांक 3 को देखने से ज्ञात होता है कि 60 प्रतिशत उत्तरदाताओं नेमाना कि समाचार-पत्र ही उनके गाँव की समस्याओं को सरकार और जनता के सामने लाता है, वहीं 10 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि रेडियो उनके गाँव की समस्याओं को सरकार और जनता के सामने लाता है और 20 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि टेलीविजन उनके गाँव की समस्याओं को सरकारऔर जनता के सामने लाता है तथा 10 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि इंटरनेट उनके गाँव की समस्याओं को सरकार और जनता के सामने लाता है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि समाचार-पत्र गावों की समस्याओं को सरकार और जनता के सामने लाने का उत्तरदायित्व उचित तरीके से निभा रहें हैं। उत्तरदाताओं के साथ अन्य विकल्प पर चर्चाएँ करते समय उनके द्वारा टेलीविजन पत्रकारिता में जिला या बड़े शहर के समस्याओं को अधिक ध्यान दिया जाता है ऐसे कहा गयाहीं रेडियों पर राष्ट्रीय ख़बरों को ही अधिक प्रसारित किया जाता है ऐसा उत्तरदाताओं का माननाहै तो इंटरनेट(सोशल मीडिया) के द्वारा गाँव की समस्याओं से संदर्भित समाचार का ज्यादा असर प्रशासन पर नहीं होता है ऐसा उत्तरदाताओं का मानना था।

निष्कर्ष:

गाँव के मीडिया उपयोग कर्ताओं को मीडिया द्वारा सूचनाएं तो प्रेषित हो तो रही,हैलेकिन उन्हें उसमें अपने गाँव से संदर्भित ख़बरों के बजाए जिला, राज्य और देश की ख़बरें अधिक मिलती हैं और गाँव के विकास से संदर्भित ख़बरें कम मिलती है

दूसरा ग्रामीण विकास से संदर्भित सूचनाएं आज भी रेडियो के माध्यम से दूर दराज के गांवों में बसे लोगों को मिलती है।हीं समाचार पत्र एवं टेलीविजन में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय समाचारों को अधिक स्थान दिए जाने के कारण ग्रामीण विकास सेसंदर्भीत ख़बरों को कम जगह मिल पाती है तथा इंटरनेट पर सूचनाएं तो बहुत है लेकिन गाँव के भौगोलिक दृष्टिकोण के अनुसार गाँव के विकास से संबंधीत सूचनाएं कम पाई जाती है ऐसानिष्कर्ष में पाया गया है।

समाचार पत्र गावों की समस्याओं को सरकार और जनता के सामने लाने का उत्तरदायित्व का कार्य बखूबी सेके से कर रहें है। आधुनिक टेलीविजन पत्रकारिता में जिला या बड़े शहर के समस्याओं को अधिक ध्यान दिया जाता है वही रेडियों पर राष्ट्रीय ख़बरोंको ही सिर्फ प्रसारित किया जाता है तथा इंटरनेट(सोशल मीडिया) के द्वारा गाँव की समस्याओं से संदर्भित समाचार का ज्यादा असरप्रशासन पर नहीं होता है। इस निष्कर्ष के आधार पर हम कह सकते हैं कि आज जब विकास में ज्ञान और तकनीक एक बड़ी भूमिका निभा रही हैं, ऐसे में देश के एक बड़े तबके को इससे वंचित नहीं रख सकते। दुर्भाग्यवश हमारी सरकारों के पास आवश्यक संसाधन और दूरदृष्टि कीकमी से ज्यादातर गांव विकास की मुख्यधारा से आज भी कटे हुए हैं।

सुझाव:

- ग्रामीणों की रूचि और स्थानीय जरूरतों को ध्यान में रखते हुए उनके लिए ऐसी योजना बनाई जाए, जिससे वो न कि सिर्फ सूचना संपन्न हो सकें, बल्कि विशेष ट्रेनिंग से अपनी हुनर और रूचि को निखार कर रोजगार केनए अवसर का भी फायदा उठा सकें।
- 'सामुदायिक सूचना संसाधन यानी 'सीआईआरसी' जैसी संस्थाओं को जो केंद्र सरकार और गांवों के बीच एक कड़ी के रूप में बड़ी भूमिका अदा कर सूचना संपन्न समृद्ध गांव का निर्माण करें ताकि देश का संपूर्ण विकास हो सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

शोध आलेख संदर्भ :

- यादव, पूजा. 2018. ग्रामीण क्षेत्र में संचार प्रौद्योगिकी की भूमिका शोध मंथन EISSN: 2454-339X.
- शर्मा, संध्या. 2016. संचार माध्यमों से बदलता ग्रामीण जीवन शब्द-ब्रह्म EISSN 2320-0871

पुस्तक संदर्भ :

- आहूजा, राम. सामाजिक अनुसंधान 2010. रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली.
- पाण्डेय, पी.एन. ग्रामीण विकास एवं संरचनात्मक परिवर्तन 2008. रावत पब्लिकेशन. जयपुर.
- मुखर्जी, नाथ रवीन्द्र और अग्रवाल, भारत. ग्रामीण समाजशास्त्र. 2018. एस बी पी डी पब्लिकेशन. आगरा.
- मीना, सिंह जनक. ग्रामीण विकास के विविध आयाम. 2010. ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली.
- राव, कुमार नीरज. सूचना प्रौद्योगिकी और सामाजिक संरचना 2011. ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली.
- सुधांशु उपाध्याय आधुनिक पत्रकारिता और ग्रामीण प्रसंग, राका प्रकाशन, इलाहाबाद.

पत्रिका संदर्भ :

- कुरुक्षेत्र, ग्रामीण विकास मंत्रालय, खंड 60, नंबर 3, जनवरी 2012.

इंटरनेट लिंक संदर्भ:

- "Report of the Commissioner for linguistic minorities: 50th report (July 2012 to June 2013)". Commissioner for Linguistic Minorities, Ministry of Minority Affairs, Government of India. दिनांक 10-04-2019, समय : दोपहर 03: 10 मिनट, दिन बुधवार.
- https://hindi.mapsofindia.com/my-india/government/medias-role-in-indian-democracy दिनांक 10-04-2019, समय : रात 09: 02 मिनट, दिन बुधवार.
- **https://defindia.org/%E**0%A4%B8%E0%A5%82%E0%A4%9A**%E**0%A4%A8**%E**0%A4%BE-**%E**0%A4%B8%E0%A4%82%E0%A4%AA**%E**0%A4%A8%E0%A5%8**D%E**0**%A**4%A8-%E0%A4%B8%E0%A4%AE**%E**0%A5%83%E0%A4%A6%E0%A5%8**D%E**0**%A**4%A7-%E0%A4%97%E0%A4%BE**%E**0%A4%82%E0%A4%B5/ दिनांक 10-04-2019, समय : रात 10: 20 मिनट, दिन बुधवार.

डॉ. सुनील दीपक घोडके
सहायक प्राध्यापक (अस्थाई) झारखंड केन्द्रीय विश्वविद्यालय, ब्राम्बे, रांची.

LBP PUBLICATION